जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

दशलक्षण एवं अष्टाह्निका पर्व भोग के नहीं; त्याग के पर्व है, इसलिये महापर्व है। इनका महत्त्व त्याग के कारण है, आमोद-प्रमोद के कारण नहीं।

ह्न धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ : 01

वर्ष : 27, अंक : 12 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (द्वितीय)2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एकप्रति : 2/-

पर्वराज पर्यूषण आया

अन्तर में जितना प्रदूषण, संचित हुआ मोह भावों से।
अपना वैभव भूल स्वयं ही, राग-द्वेष के परिणामों से।।
उनको सहज मिटाने आया, समताभाव जगाने आया।
पर्वराज पर्यूषण आया।।1।।

सभी कषायों की ज्वालाएँ, धर्मभाव से बुझ जाती हैं।
कलुष-कालिमा परभावों की स्व अनुभव से धुल जाती हैं।।
वस्तु तत्त्व समझाने आया, स्वपर भेद कराने आया।
पर्वराज पर्यूषण आया।।2।।

दशधर्मों के दशलक्षण हैं, भाव समझलो उनके भाई।
सभी धर्म धर्मी में रहते, धर्मी को पहिचानों भाई।।
धर्म मार्ग बतलाने आया, भव का नाश कराने आया।
पर्वराज पर्यूषण आया।।3।।

उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप जानो।
त्याग अकिंचन, ब्रह्मचर्य की महिमा को अन्तर में जानों।।
धर्मभाव समझाने आया, कर्म कलंक मिटाने आया।
पर्वराज पर्यूषण आया।।4।।

निज का दृढ़ श्रद्धान करो से, निज की ही पहिचान करो रे।
निज में रमना-निज में जमना, और नहीं कुछ काम करो रे।।
रत्नत्रयी समझाने आया, मुक्तिमार्ग बतलाने आया।
पर्वराज पर्यूषण आया।।5।।

ह्न बाबूलाल बांझल, गुना

शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न

एर्नाकुलम् (कोचीन) : यहाँ 30 अगस्त, 04 को श्री महावीरस्वामी दि. जिनमन्दिर, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन एवं वीतराग-विज्ञान पाठशाला भवन का शिलान्यास ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री सम्मेदशिखरजी विधान का आयोजन किया गया; जिसमें पं. सुनीलजी शास्त्री, पं.महावीरजी मांगुलकर, पं. संदीपजी शास्त्री, पं.अजीतजी शास्त्री एवं पं. दीपकजी शास्त्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

शिविर सानन्द सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ चन्द्रप्रभ दि. जैन चैत्यालय में दि. 15 से 25 जुलाई तक शिविर एवं वार्षिकोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इसीप्रसंग पर शांतिविधान का आयोजन हुआ; जिसके विधि-विधान के कार्य पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, हेमन्तजी शास्त्री एवं जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये। ह्न दीपचन्द गांधी

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

सोलापुर (महा.) : यहाँ जैन विकास महिला मण्डल द्वारा श्री आदिनाथस्वामी दि. जैन मन्दिर, सोलापुर में दिनांक 23 से 30 अगस्त, 04 तक सिद्धचक्र विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विक्रान्तजी शहा एवं पण्डित प्रशांतजी मोहरे द्वारा कराये गये।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी आलंदकर, पण्डित सुरेशजी कोठडिया एवं पण्डित प्रशान्तजी के प्रवचन एवं कक्षा का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। साथ ही तीन स्थानों पर नवीन पाठशालायें प्रारंभ की गईं।

धर्मप्रभावना

जसवन्तनगर (उ.प्र.) : यहाँ विदुषी बाल ब्र. कल्पनाबेन, जयपुर द्वारा दिनांक 4 जून से 6 अगस्त, 04 तक लगभग दो माह अनवरत धर्मप्रभावना हुई।

प्रतिदिन प्रात: लघु जैन सि. प्रवेशिका, दोपहर में भक्तामरस्तोत्र, देवागमस्तोत्र एवं महावीराष्टक स्तोत्र, रात्रि में छहढ़ाला ग्रन्थ पर विवेचन किया गया तथा अष्टाह्निका पर्व में पंचमेरू नन्दीश्वर पूजा की जयमाला पर विवेचना की गई। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

पुस्तक विमोचन सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के अवसर पर डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा लिखित '**प्रमाण-ज्ञान**' तथा '**चलो पाठशाला चलो सिनेमा**' नामक दो पुस्तकों का विमोचन दिनांक 11 अगस्त, 2004 को श्री दि.जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी बड़जात्या, इन्दौर के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

18 से 27 सितम्बर	कोल्हापुर (महा.)	दिगम्बर पर्यूषण
28 सितम्बर	सांगली (महा.) - प्रात: 9 बजे	प्रवचन
28 सितम्बर	उगार-बद्रुक (कर्ना.) रात्रि 8 बजे	प्रवचन
29 सितम्बर	बेलगाम (कर्नाटक)	प्रवचन
2 अक्टूबर	नागेश्वर तीर्थ (गुज.)	जैन सोशल ग्रुप
17 से 26 अक्टूबर	जयपुर (राज.)	शिक्षण-शिविर
26 नव. से 2 दिसम्बर	शिकोहाबाद (उ.प्र.)	पंचकल्याणक
27 से 31 दिसम्बर	देवलाली (महा.)	विधान एवं शिविर

शिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण शिविर पत्रिका

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

15

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....गाथा– 21 का शेष ...)

''इस गाथा में जीव की उत्पाद–व्यय अवस्था से सत् के उच्छेद को और असत् के उत्पाद को सिद्ध करते हैं। इसमें आत्मा की विकारी पर्याय को चार प्रकार से सिद्ध किया है। जीवद्रव्य तो त्रिकाली एकरूप है; परन्तु उसकी पर्याय में चार प्रकार से कर्त्तापना है।

जीव, द्रव्य से शुद्ध और पर्याय से अशुद्ध है। अशुद्ध पर्याय में प्रतिक्षण (१) भाव (२) अभाव (३) भावाभाव और (४) अभाव–भाव ह्न इन चार भावों का कर्तृत्व है।

आत्मा में उत्पाद–व्यय के द्वारा सत् का विनाश और असत् का उत्पाद होता है, ध्रुवभाव टिका रहता है।

ऊपर जो चार बोल कहे ह्न उसका खुलासा इसप्रकार है ह्न

१. देवपर्याय को प्राप्त होना 'भाव' का कर्तृत्व है।

२. मनुष्य पर्याय का 'अभाव' होना अभाव का कर्तृत्व है।

३. विद्यमान देव पर्याय के नाश का आरंभ ''भावाभाव'' का कर्तृत्व है। तथा

४. अविद्यमान मनुष्य पर्याय के उत्पाद का आरंभ 'अभावभाव' का कर्तृत्व है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि आत्मा देवपर्याय का 'भाव' करता है। मनुष्य पर्याय का अभाव करता है, परन्तु आत्मा का नाश नहीं होता। जब देव से मनुष्य की सन्मुखता करता है, उससमय भी देव का जो भाव है, उसका अभाव करता है, यह 'भावाभाव' का कर्तृत्व है और देवपर्याय के समय जो मनुष्य भाव नहीं है, उस भाव का कर्त्तापना 'अभावभाव' का कर्तृत्व है।

ये चारों भाव पर्यायदृष्टि से हैं, द्रव्यदृष्टि से ये चारों भाव नहीं।

यहाँ प्रतिपादित इन चार भावों को समझाने का मूल प्रयोजन यह है कि ह्न ऐसा निर्णय होने पर उसके क्रम में संसार का अभाव होकर सिद्धदशा का क्रम प्रारंभ हो जाता है।

यद्यपि अभी कोई व्यक्ति मनुष्य हो, परन्तु मांसादि का सेवन करता हो, शिकार खेलता हो, हिंसक हो, बहुपरिग्रही हो तो वह अभी भी भावों से नारकी ही है। भले ही दस–बीस वर्ष का मनुष्य जीवन शेष हो, उसकी मुख्यता नहीं करते यह भावाभाव कर्तृत्व का उदाहरण है और यद्यपि मोक्षमार्ग की पर्याय में सिद्ध की पर्याय अभी नहीं है, तथापि उसका प्रारंभ करता है, यह अभावभाव के कर्तृत्व का उदाहरण है।

जो जीव उक्त पर्याय भावों को संसार का क्रम जानकर यह निर्णय करता है कि यह क्रम द्रव्य स्वभाव में नहीं है, उसके संसार में भटकने का क्रम टूट कर शुद्धता का क्रम प्रारंभ हो जाता है।

यहाँ ज्ञातव्य है कि ये विकारी भाव या देवादि पर्यायें पर के कारण नहीं होती। आत्मा अपनी पर्याय का कर्ता स्वयं होता है, कर्म इनका कर्ता नहीं है, कर्म तो निमित्त मात्र हैं।

सारांश यह है कि जीव को जिस गति में जाना है, उसके उस 'भाव' का कर्तृत्व है। जिस पर्याय (गति) का नाश होता है, जीव के उसके अभाव का कर्तृत्व है। जो भाव है, उसका अभाव करने की प्रारंभ दशा भावाभाव का कर्तृत्व और जो भाव नहीं है उसका प्रारंभ होना अभावभाव का कर्तृत्व है। देवत्वपर्याय और मनुष्यत्वपर्याय को रचनेवाले देव–गति नामकर्म और मनुष्यगति नामकर्म मात्र उतने काल जितने ही होते हैं।

इसी विषय को बांस की पोरों का दृष्टान्त देकर स्पष्ट किया है।

इसप्रकार पूर्वोक्त तीन गाथाओं में किए गए पर्यायर्थिकनय के व्याख्यान द्वारा मनुष्य–नारकादि रूप से उत्पाद–विनाशत्व घटित होता है; तथापि द्रव्यार्थिकनय से सत्/विद्यमान जीव द्रव्य का विनाश और असत्/अविद्यमान जीव द्रव्य का उत्पाद नहीं है।

कविवर हीरानन्दजी इसी बात के समर्थन में कहते हैं कि ह्न

सत–विनास नहिं होत है, असत न उपजै राम।
जीव विसै सुर–नर लसै, देव–मनुष गति नाम।।

आगामी पद्य में बांस की पोर के उदाहरण से विषय का स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं ह्न

(सवैया इकतीसा)

जैसे बाँसदंड एक तामैं गाँठ हैं अनेक,
आप आप सीमा विषै अस्तिभाव आया है।
आन गाँठि विषै आन गाँठि का अभाव लसै,
बाँस दंड एक सबै गाँठि मैं समाया है।।
गाँठि कै अभाव विषै दंड का अभाव नाहिं,
तैसैं कै परजै माहिं द्रव्यरूप गाया है।
दरव है नित्य एक परजै अनित्य नैक
नय कै विलासमध्य वस्तुतत्त्व पाया है।।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उक्त विषय को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ह्न ''मनुष्य पर्याय का व्यय होता है और देवपर्याय का उत्पाद होता है' ह्न यह कथन कर्म के निमित्त से आत्मा में होनेवाली विभाव पर्याय की अपेक्षा से सत्य है। इससे यह सिद्ध हुआ कि ध्रुवपने की अपेक्षा से जो जीव मरता है, वही जीव उत्पन्न होता है और उत्पाद–व्यय की अपेक्षा से मरता मनुष्य है और उपजता देव है। पर्याय दृष्टि से भव बदल जाने पर सब संयोग बदल जाते हैं; इसलिए ऐसा कहने में आता है कि 'नया जीव उत्पन्न होता है।' वस्तुत: तो द्रव्य नया उत्पन्न नहीं होता।

जीवद्रव्य त्रिकाली अविनाशी एक है, उसमें क्रमवर्ती बांस की पोरों की भाँति देव मनुष्यादि अनेक पर्यायें हैं। सभी भव एकसाथ नहीं होते, क्रम से ही होते हैं। उनमें जीवद्रव्य त्रिकाल रहता है, इसप्रकार आत्मा को अनेक भव की अपेक्षा अनेक भी कहा जाता है और अन्य–अन्य पर्यायों की अपेक्षा अन्य–अन्य भी कहा जाता है, परन्तु द्रव्य की अपेक्षा सत् का कभी विनाश नहीं होता और असत् का कभी उत्पाद नहीं होता ह्न यही इस गाथा का विषय है। ●

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 13

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अब सुखाधिकार का आरंभ करते हैं। सुखाधिकार में भी ज्ञान की ही महिमा गाई गई है। अधिकार के अंत में सांसारिक सुख का वर्णन किया गया है। सांसारिक सुख; सुख नहीं है, दु:ख ही है। **जिसे अतीन्द्रिय –ज्ञान है, उसे ही अतीन्द्रियसुख उत्पन्न होता है। अतीन्द्रियसुख को प्राप्त करने के लिए किसी पृथक् पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं है।**

आजकल माल बेचने की एक तकनीक चली है कि जो व्यक्ति एक मोक्षमार्गप्रकाशक खरीदेगा; उसे उसके साथ दूसरा मोक्षमार्गप्रकाशक मुफ्त में दिया जाएगा। अमरीका में ऐसे बोर्ड लगे रहते हैं कि '**वन बाय गेट वन फ्री**' एक खरीदो और दूसरा मुफ्त में पाओ।

यदि कोई कहे कि एक की कीमत लेकर दो वस्तुएँ देने के स्थान पर आधी कीमत कर देना ही ठीक है।

उससे कहते हैं कि यदि हम आधी कीमत करके बेचे तो एक मोक्षमार्गप्रकाशक ही बिकेगा। हमें बिक्री दुगुना करना है, आधी नहीं। दोनों के बराबर एक का मूल्य रखकर फिर एक के साथ एक फ्री करते हैं तो लेनेवाला दो ले जाता है।

वहाँ विटामिन की दवाईयों में ऐसा बहुत होता है। १०० गोलियों की एक शीशी खरीदो तो दूसरी शीशी फ्री में दी जाती है।

ऐसे ही यहाँ आचार्य कह रहे हैं कि केवलज्ञान खरीदो तो अनंतसुख मुफ्त में मिलेगा। **केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें जो आत्मोन्मुखी होने का पुरुषार्थ करना पड़ेगा, उसी पुरुषार्थ से स्वयमेव अनंतसुख, अनंतवीर्य और अनंतदर्शन प्राप्त होगा। यह सारी महिमा ज्ञान की है। यहाँ मुख्य सक्रिय ज्ञानगुण ही है। यही कारण है कि सुखाधिकार में भी ज्ञान के ही गीत गाये जा रहे हैं।**

अब इस ५३वीं गाथा से सुखाधिकार प्रारम्भ करते हैं। इसमें भी ज्ञान की ही चर्चा मुख्यरूप से है ह्न

अत्थि अमुत्त मुत्तं अदिंदियं इंदियं च अत्थेसु।
णाणं च तहा सोक्खं जं तेसु परं च तं णेयं।।५३।।

(हरिगीत)

मूर्त और अमूर्त इन्द्रिय अर अतीन्द्रिय ज्ञान–सुख।
इनमें अमूर्त अतीन्द्रियी ही ज्ञान–सुख उपादेय हैं।।

पदार्थों संबंधी ज्ञान और सुख अमूर्त, मूर्त, अतीन्द्रिय और इन्द्रियरूप होता है। उनमें जो प्रधान है, वह उपादेयरूप जानना चाहिए।

ज्ञान के समान सुख भी दो–दो प्रकार का होता है ह्न इन्द्रियसुख व अतीन्द्रियसुख, मूर्तसुख व अमूर्तसुख। आत्मा से उत्पन्न होनेवाले सुख को अमूर्तसुख कहा जाता है और पंचेन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाले सुख को मूर्तसुख कहा जाता है।

विषयों की दृष्टि से उसे मूर्त नाम दे दिया है और इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करते हैं; इसलिए उसे इन्द्रिय नाम दे दिया है। जो इन्द्रिय के बिना सीधे आत्मा से ग्रहण करता है; वही अतीन्द्रियज्ञान व अतीन्द्रियसुख है। जिसप्रकार ज्ञान मूर्त व अमूर्त, इन्द्रिय व अतीन्द्रिय होता है; उसीप्रकार सुख भी मूर्त व अमूर्त तथा इन्द्रिय व अतीन्द्रिय होता है। **इन्द्रियज्ञान के साथ में इन्द्रियसुख की प्राप्ति अनिवार्य है तथा अतीन्द्रियज्ञान के साथ में अतीन्द्रियसुख की प्राप्ति अनिवार्य है।**

चारों अनुयोगों के शास्त्रों में पाँचों इन्द्रिय के विषयों के सुख का मजबूती से निषेध किया गया है। पाँचों इन्द्रियों के विषयभोगों से उत्पन्न सुख का निषेध जैनेतर शास्त्रों में भी किया है।

अब, आचार्य कहते हैं कि इन्द्रियज्ञान इन्द्रियसुख का साधनभूत है। इसलिए जब इन्द्रियसुख हेय है तो इन्द्रियज्ञान भी हेय ही हो गया।

इन्द्रियसुख की सत्ता का निषेध कहीं भी नहीं है। परन्तु ये वास्तविक सुख नहीं हैं, नाममात्र का सुख हैं। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि इन्द्रियसुख; सुख नहीं है, दु:ख ही है। इसीप्रकार यह भी कहा जाता है कि इन्द्रियज्ञान ज्ञान नहीं है।

इसमें तो कोई गड़बड़ी नहीं है; लेकिन गड़बड़ी तब होती है कि जब इन्द्रियसुख सुख नहीं है, दु:ख ही है ह्न ऐसा कहकर हम जगत में उसकी सत्ता से ही इन्कार करने लगते हैं।

इन्द्रियसुख नामक जो वस्तु है, उसके अस्तित्व से इन्कार नहीं है; किन्तु इन्द्रियसुख में सुखत्व का निषेध है।

रोटी बनानेवाला भी पंडित होता है और शास्त्रों का जानकार भी पंडित होता है। जब हम कहते हैं कि रोटी बनानेवाला पंडित नहीं है तो इसमें उसकी सत्ता से इन्कार नहीं किया है, अपितु उसकी विद्वत्ता से इन्कार किया है। समाज उसे भी पण्डित नाम से जानती है तो जाने; उससे इन्कार नहीं है, पर उसके पाण्डित्य से इन्कार है। ऐसे ही **इन्द्रियसुख सुख नहीं है; इसमें इन्द्रियसुख की सत्ता से इन्कार नहीं है; अपितु उसके वास्तविक सुखपने से इन्कार है।**

ऐसे ही इन्द्रियज्ञान; ज्ञान नहीं है; इसमें इन्द्रियज्ञान की सत्ता से इन्कार नहीं था। यहाँ वह इन्द्रियज्ञान वास्तविक ज्ञान नहीं है अथवा सम्यग्ज्ञान नहीं है, आत्मा का कल्याण करनेवाला नहीं है ह्न उक्त कथन इस अर्थ में ही है।

परंतु हमने इन्द्रियज्ञान, ज्ञान नहीं है; वह तो ज्ञेय है ह्न ऐसा कहकर उसके ज्ञानत्व का ही निषेध किया; परंतु यहाँ ऐसा अर्थ नहीं है।

यद्यपि इन्द्रियज्ञान में जानने की क्रिया हो रही है; परंतु वह हमारे काम की नहीं है। यहाँ जानने की क्रिया का निषेध नहीं है; परंतु हम इन्द्रियज्ञान में जानने की क्रिया का ही निषेध करने लग गए हैं। यही हमारी भूल है।

जो न्यायशास्त्र नहीं पढ़ते हैं; वे ही ऐसे भूलें करते हैं। एक व्यक्ति यहाँ से जा रहा है, उसे कोई चमकदार पदार्थ नीचे पड़ा हुआ दिखा। झुककर देखा तो काँच का टुकड़ा था, उसने हीरा समझा था और निकला काँच का टुकड़ा। इसलिए उसने उसे तुरंत फेंक दिया।

पीछेवाले ने पूछा 'क्या है ?' वह बोला ह्न 'कुछ नहीं।'

कुछ नहीं ह्न ऐसा कैसे हो सकता है ? वह झुका था तो कुछ न कुछ तो होगा ही। अरे भाई! यहाँ कुछ नहीं है अर्थात् कोई काम की चीज नहीं है।

'कुछ नहीं।' – ऐसा कहकर यहाँ उसकी सत्ता से इन्कार नहीं किया है; अपितु उसकी प्रयोजनभूतता से इन्कार किया है। ऐसे ही 'इन्द्रियज्ञान ज्ञान नहीं' इसमें इन्द्रियज्ञान की सत्ता से इन्कार करना अन्याय है, गलत है। इन्द्रियज्ञान प्रयोजनभूत नहीं है ह्न इसका नाम ही इन्द्रियज्ञान ज्ञान नहीं है ह्न यदि ऐसा कहते हैं तो कोई समस्या नहीं है। इसे ही इन्द्रियज्ञान हेय है ह्न ऐसा कहा जाता है। **(क्रमश:)**

शिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण शिविर पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

आराधना का पर्व ह्न दशलक्षण महापर्व

ह्न विराग शास्त्री, जबलपुर

क्षमा ह्न अरी तृष्णा ! सजधज कर कहाँ जा रही हो ?

तृष्णा ह्न अरे क्षमा तुम ! मैं तो शॉपिंग करने जा रही हूँ।

क्षमा ह्न अभी न तो शादी का मौसम है और न ही कोई त्यौंहार फिर शॉपिंग क्यों ?

तृष्णा ह्न अरे भगवान ! जैसे तुझे पता ही नहीं है।

क्षमा ह्न तो तुम ही बता दो।

तृष्णा ह्न अरे ! १८ सितम्बर से दशलक्षण महापर्व शुरू हो रहे हैं। अब इतने बड़े पर्व पर पुरानी साड़ियाँ पहनना शोभा थोडे ही देता है; इसलिये कुछ साड़ियाँ, जेवर और मेकअप का सामान खरीदने जा रहीं हूँ।

क्षमा ह्न बड़ा आश्चर्य है। संयम और सादगी के महापर्व को तुम श्रृंगार महोत्सव समझ रही हो।

तृष्णा ह्न बस ! बस !! अपना उपदेश अपने पास ही रखो।

क्षमा ह्न बात उपदेश की नहीं है तृष्णा ! वास्तविकता की है। जैनधर्म के पर्व राग-रंग और भोग के नहीं; अपितु संयम और आत्म-आराधना के पर्व होते है। ये दस दिन तो गृहस्थी के आरंभ कार्यों में कमी कर विशेषरूप से आत्मसाधना करने के है।

तृष्णा ह्न तो फिर श्रृंगार करें ही नही क्या?

क्षमा ह्न अरे ! श्रृंगार तो नारी का आभूषण है; किन्तु ऐसा श्रृंगार भी क्या करना जिससे स्वयं के साथ-साथ दूसरों के परिणाम विचलित हों, इससे शील में दोष लगता है और देह से भिन्न आत्मा के इस पर्व में देह का श्रृंगार कितना पागलपन है। यदि इस मंगल पर्व में भी हमारे विषयभोगों में कमी नहीं आई तो यह महापर्व भी शादी-विवाह तथा होली-दिवाली के समान ही हो जायेगा।

तृष्णा ह्न अच्छा ! तू ही बता क्या करूं ?

क्षमा ह्न अरे करना नहीं है। कर्तृत्व छोड़ना है। मन्दिरजी में पण्डितजी आ रहे है। दिन में तीन समय उनके प्रवचनों का लाभ लेना और अधिक समय तत्त्वचर्चा और आत्मचिंतन में बिताना।

तृष्णा ह्न पर ! प्रवचन रात में होंगे तो मेरा फेवरेट टी.वी.सीरियल छूट जायेगा।

क्षमा ह्न अरे ! तू भी गजब करती है। पर्व के दिनों में टी.वी. देखकर ज्यादा पाप कमायेगी क्या ? महापर्व के दिनों में इन सबका त्याग होना चाहिये; बल्कि अपना उपयोग भी स्वाध्याय में लगाना चाहिये। देह की संभाल नहीं आत्मा की संभाल करना चाहिये।

तृष्णा ह्न वाह ! तुमने मुझे पर्व के महानता का अहसास करा दिया।

क्षमा ह्न तो चलो मन्दिर।

तृष्णा ह्न अभी क्यूँ ?

क्षमा ह्न आज विधान की तैयारी है और पूजन व स्वाध्याय की किताबें निकालना है; ताकि सबको लाभ मिल सके।

तृष्णा ह्न हाँ ! हाँ ! चलो ये तो जिनधर्म की सेवा है। ❊

नवीन संगठन खोलनेवाले ध्यान दें

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी द्वारा प्रदत्त वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु नवीन क्षेत्रीय संगठनों को गतिविधियाँ प्रारंभ होने के कुछ समय बाद दो बार में 7,500/- रुपये जयन्तिभाई डी. दोशी, दादर-मुम्बई की ओर से स्थापित ध्रुवफण्ड से प्रदान किये जायेंगे। **पता ह्न** 84-बी, पश्चिम अपार्टमेंट, कीर्ति कॉलेज के पास, दादर (वेस्ट), मुम्बई ह्न 28

अब साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल

ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचन प्रतिदिन सोमवार से शनिवार रात्रि 10.00 बजे तथा रविवार को दोपहर 2.30 बजे नियमितरूप से साधना चैनल पर प्रसारित किये जा रहे हैं। इसप्रकार मीडिया के बाद अब सैटेलाइट जगत में भी डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों की धूम मची हुई है।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अहिंसा, शाकाहार, श्रावकधर्म-बारहव्रत, ग्यारह प्रतिमायें, षट्आवश्यक, वैराग्यवर्धक बारह भावनायें, अनेकांतवाद, वस्तुव्यवस्था, आत्मा-परमात्मा जैसे गंभीर विषयों पर अत्यन्त सरल एवं सरस मार्मिक प्रवचनों का लाभ जन सामान्य को प्राप्त हो रहा है; आप भी इसका लाभ प्राप्त करें।

ये प्रवचन दिनांक 10 सितम्बर, 2004 से प्रसारित हो रहे हैं।

यदि आपके गांव/शहर में साधना चैनल न आता हो तो अपने केबल ऑपरेटर से कहकर प्रारंभ करावें। कोई कठिनाई होने पर श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 011-32106419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महा. जयपुर के स्नातक पण्डित शांतिनाथ पाटील, एरंडोली ने राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की आचार्यह्न2003 परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया; एतदर्थ संस्कृत दिवस समारोह के दिन राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधराराजे सिंधिया द्वारा प्रशस्तिपत्र देकर आपको सम्मानित किया गया। आपकी इस उपलब्धि पर जैनपथप्रदर्शक समिति एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

ह्न प्रबन्ध सम्पादक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (द्वितीय) 2004
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127